केदारनाथ सिंह

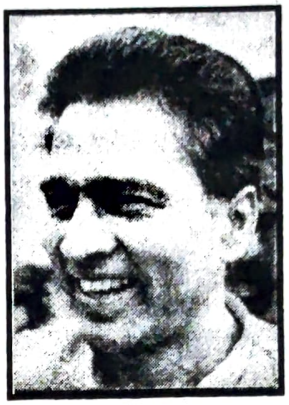

जन्म	:	1932 ।
जन्म-स्थान	:	चकिया, जिला-बलिया, उत्तर प्रदेश ।
शिक्षा	:	एम० ए०, पी-एच० डी०, वाराणसी ।
वृत्ति	:	प्राध्यापन । पडरौना, गोरखपुर, वाराणसी और नई दिल्ली में ।
संप्रति	:	भारतीय भाषा विभाग, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से हिंदी के प्रोफेसर पद से सेवामुक्त । स्वतंत्र लेखन ।
सम्मान	:	साहित्य अकादमी, 'कुमारन आशान' कविता पुरस्कार, दयावती मोदी कविता पुरस्कार आदि ।
कृतियाँ	:	अभी बिलकुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ, बाघ (कविता संग्रह); कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान, मेरे समय के शब्द (आलोचना तथा शोध)। 'प्रतिनिधि कविताएँ' (सं० परमानंद श्रीवास्तव) - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

बीसवीं शती के छठे दशक में कविता लिखना प्रारंभ करने वाले केदारनाथ सिंह 'नई कविता' आंदोलन के एक महत्त्वपूर्ण कवि के रूप में पाठकों के सामने आए थे । गँवई किसान जीवन और संस्कृति के टटके अछूते बिंबों के कारण उनकी पहचान शीघ्र ही एक समर्थ संभावनाओं वाले कवि के रूप में बनी । आठवें दशक में वे अपनी पीढ़ी के प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए और आज वे हिंदी के एक प्रमुख कवि हैं ।

केदारनाथ सिंह कविता में सबसे ज्यादा ध्यान बिंबों के निर्माण और कविता में उनके गतिशील नाटकीय रचाव पर देते हैं । बिंबों द्वारा प्राय: वे पाठक पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं तथा संपुंजित रूप में बड़े गहरे और व्यापक अर्थ संप्रेषित करते हैं । बिंबों के ही कारण कल्पना और मूर्तिविधान की उनकी कविता में एक सक्रिय रचनात्मक भूमिका बनती है । किंतु यह सब कवि के गहरे यथार्थबोध के स्वाभाविक अनुशासन में संपन्न होता है । अनुभूतिपरक अर्थ को, उसकी पूरी ताजगी, सघनता और बहुव्यापी संदर्भों के साथ संप्रेषित करने के लिए केदारनाथ सिंह को कविता की भाषा, शैली और शिल्प संबंधी अनेक स्तरों पर एक चौकन्नी सजगता बरतनी पड़ती है; ताकि अनेक तथ्यों और सच्चाइयों का एकत्र संधान किया जा सके ।

अपनी बहुप्रचारित प्रसिद्ध लंबी कविता 'बाघ' के बाद केदारनाथ सिंह ने इधर की कविताओं में संप्रेषण और सुगमता को लेकर अपना ध्यान अधिक केंद्रित किया है । इसके लिए उन्होंने बोलचाल और संवादों

की सामान्य नाटकीय शैली का भरपूर उपयोग अपनी कविताओं में साधा है । महानगर में रहने-जीने और वहाँ के विषयों-कथ्यों का कविता में समावेश करते हुए भी अपनी मूल धरती–गाँवों और वहाँ की जिंदगी को वे भूले नहीं हैं । गँवई और कस्बाई जीवन उनके लिए कभी भी ऐसी सचाई नहीं बना जिससे वे उखड़कर दूर जा पड़े हों, उससे विच्छिन्न हो चुके हों और अब उसकी भावुकतापूर्ण स्मृति उनके भीतर शेष रह गई हो । अपनी खो चुकी जमीन के लिए हूक या तड़प उनके भीतर नहीं दिखती, क्योंकि यह उनकी समस्या नहीं है । उनकी जमीन, उनका परिवेश और उनके संबंधों का राग उनके भीतर बदस्तूर महफूज रहा है । यही कारण है कि उनकी कविताओं की दुनिया में अंतर्विभाजन की कोई फाँक नहीं दिखती ।

गाँव हो या शहर, कस्बा हो या महानगर, सर्वत्र कवि परिवेश, चरित्र और संबंधों का एक ही सच देखता है जहाँ उनपर समय और यथार्थ की मार पड़ती रहती है और वे उसे झेलते-भुगतते अपने को बचाए रखने के संघर्ष में निरत हैं । यहाँ प्रस्तुत कविता 'जगरनाथ' ऊपर कही बातों की तस्दीक-सी करती है ।

♦ ♦ ♦

हिमालय किधर है ?
मैंने उस बच्चे से पूछा जो स्कूल के बाहर
पतंग उड़ा रहा था

उधर-उधर – उसने कहा
जिधर उसकी पतंग भागी जा रही थी

मैं स्वीकार करूँ
मैंने पहली बार जाना
हिमालय किधर है !

(दिशा : प्रतिनिधि कविताएँ)

–केदारनाथ सिंह

जगरनाथ

कैसे हो मेरे भाई जगरनाथ ?
कितने बरस बाद तुम्हें देख रहा हूँ
यह गुम्मट-सा क्या उग आया है
तुम्हारे ललाट पर ?
बच्चे कैसे हैं ?
कैसा है वह नीम का पेड़
जहाँ बँधती थी तुम्हारी बकरी ?
मैं ?
मैं तो बस ठीक ही हूँ
खाता हूँ
पीता हूँ
बक-बक कर आता हूँ क्लास में
यदि मिल गया समय तो दिन में भी
मार ही लेता हूँ दो-एक झपकी
पर हमेशा लगता है मेरे भाई
कि कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है
पर छोड़ो तुम कैसे हो ?
कैसा चल रहा है कामधाम ?
अरे वो ?
उसे जाने दो
वह बनसुग्गों की पाँत थी
जो अभी-अभी उड़ गई हमारे ऊपर से
वह है तो है
नहीं है तो भी चलती ही रहती है जिंदगी
पर यह भी सच है मेरे भाई
कि कई दिनों बाद

यदि आसमान में कहीं दिख जाय
एक हिलता हुआ लाल या पीला-सा डैना
तो बड़ी राहत मिलती है जी को
पर यह तो बताओ
तुम्हारा जी कैसा है आजकल ?
क्या इधर बारिश हुई थी ?
क्या शुरू हो गया है आमों का पकना ?
यह एक अजब-सा फल है मेरे भाई
सोचो तो एक स्वाद और खुशबू से
भर जाती है दुनिया
पर यह क्या ?
तुम्हारे होंठ फड़क क्यों रहे हैं ?
तुम अब तक चुप क्यों हो मेरे भाई ?
जरा पास आओ
मुझे बहुत कुछ कहना है
अरे, तुम इस तरह खड़े क्यों हो ?
क्यों मुझे देख रहे हो इस तरह ?
क्या मेरे शब्दों से आ रही है
झूठ की गंध ?
क्या तुम्हें जल्दी है ?
क्या जाना है काम पर ?
तो जाओ
जाओ मेरे भाई
रोकूँगा नहीं
जाओ.....जाओ.....

और इस तरह
वह चला जा रहा था
मुझे न देखता हुआ
और उस न देखने की धार से
मुझे चीरता-फाड़ता हुआ
मेरा बचपन का साथी
जगरनाथ ..... !

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि को क्यों लगता है कि कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है ?
2. ''वह बनसुग्गों की पाँत थी
   जो अभी-अभी उड़ गई हमारे ऊपर से
   वह है तो है
   नहीं है तो भी चलती रहती है जिंदगी''
   -इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें और इसकी काव्य चेतना पर भी विचार रखें।
3. कवि को आसमान में लाल-पीले डैनेवाले पक्षियों को देखकर राहत मिलती है तो वह बनसुग्गों की पाँत की उपेक्षा क्यों करता है ? आप इसका क्या कारण समझते हैं ?
4. कवि को अपने शब्दों से झूठ की गंध आने का संशय क्यों होता है ?
5. जगरनाथ की चुप्पी और उसके होठों के फड़कने में क्या संबंध है ?
6. कवि को अपनी दिनचर्या से असंतोष क्यों है ?
7. जगरनाथ को जाते हुए देखकर कवि को ऐसा क्यों लगता है कि वह उसे चीरता-फाड़ता हुआ जा रहा है ?
8. कविता का नायक कौन है ?
9. कविता का शीर्षक 'जगरनाथ' क्यों है ?
10. इस कविता में आपको प्रिय लगती पंक्तियाँ कौन-कौन-सी हैं और क्यों ?
11. कवि का पेशा क्या है ?
12. कविता में जगरनाथ के ललाट पर उग आए गुम्मट का विवरण क्यों दिया गया है ?
13. कविता में जगरनाथ का केवल चित्रण है और कवि का एकालापी वक्तव्य, जबकि कविता का शीर्षक 'जगरनाथ' है। यहाँ जगरनाथ का वक्तव्य क्यों नहीं आ सका है ?
14. कविता में प्रश्नवाचक चिह्नों के प्रयोग बहुत हैं। उसकी सार्थकता पर विचार कीजिए।
15. कविता का शीर्षक है 'जगरनाथ', जिसका शुद्ध रूप जगन्नाथ है। शीर्षक में इस तद्भव रूप का प्रयोग कवि ने क्यों किया है ?

कविता के आस-पास

1. आकाश में उड़ते पक्षियों को देखकर आप कैसा अनुभव करते हैं ? अपने शब्दों में लिखिए।
2. बहुत दिनों के बाद अपने बचपन के मित्र से मिलकर आपको कैसी अनुभूति होगी ? आप उनसे क्या

प्रश्न पूछेंगे ?

3. केदारनाथ सिंह ने अन्य व्यक्ति चरित्रों पर भी कविताएँ लिखी हैं । ऐसी एक कविता यहाँ दी जा रही है जिसमें नूर मियाँ अंकित हैं । इसे पढ़ते हुए पठित कविता के साथ उसकी तुलना करें और एक टिप्पणी लिखें –

तुम्हें नूर मियाँ की याद है केदारनाथ सिंह ?
गेहुँए नूर मियाँ
ठिगने नूर मियाँ
रामगढ़ बाजार से सुर्मा बेचकर
सबसे अखीर में लौटने वाले नूर मियाँ
क्या तुम्हें कुछ भी याद है केदारनाथ सिंह ?

तुम्हें याद है मदरसा
इमली का पेड़
इमामबाड़ा
तुम्हें याद है शुरू से अखीर तक
उन्नीस का पहाड़ा
क्या तुम अपनी भूली हुई स्लेट पर
जोड़-घटा कर
यह निकाल सकते हो
कि एक दिन अचानक तुम्हारी बस्ती को छोड़कर
क्यों चले गए थे नूर मियाँ
क्या तुम्हें पता है
इस समय वे कहाँ हैं
ढाका
या मुल्तान में ?
क्या तुम बता सकते हो
हर साल कितने पत्ते गिरते हैं
पाकिस्तान में ?

तुम चुप क्यों हो केदारनाथ सिंह ?
क्या तुम्हारा गणित कमजोर है ?

4. केदारनाथ सिंह पेशे से एक शिक्षक हैं । यह मालूम करने की कोशिश करें कि वे कहाँ-कहाँ शिक्षक थे और शिक्षक के रूप में उनकी कैसी ख्याति रही है ?
5. केदारनाथ सिंह की मशहूर लंबी कविता है 'बाघ' । वह कविता उपलब्ध कर पढ़ें और उस पर शिक्षक

से चर्चा करें ।

6. केदारनाथ सिंह की कविता में गाँव और शहर दोनों आते हैं । इनमें किसका चित्रण अधिक सफलता के साथ हुआ है । इस विषय पर अपने शिक्षक से चर्चा करें ।

भाषा की बात

1. बक-बक, अभी-अभी में कौन-सा समास है ?
2. बक-बक करना, ठीक ही होना, इस तरह के कई मुहावरे कविता में हैं । आप उन मुहावरों को छाँट कर लिखिए और उनका वाक्य-प्रयोग कीजिए ।
3. कविता में प्रयुक्त अव्ययों को चुन कर लिखें ।
4. इन शब्दों के पर्यायवाची लिखेंhttps://www.evidyarthi.in/
   ललाट, पेड़, क्लास, पाँत, आसमान, राहत, बारिश, खुशबू, साथी ।
5. कविता में कई सर्वनाम हैं । आप उन सर्वनामों को छाँटें और बताएँ कि वे किस प्रकार के सर्वनाम हैं ?
6. कवि यहाँ उत्तम पुरुष की भूमिका में है । उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष का अंतर वाक्य प्रयोग द्वारा स्पष्ट करें ।

शब्द निधि

गुम्मट	:	चोट लगने से उभर आने वाली गिल्टी
बनसुग्गा	:	वन में रहने वाला गैरपालतू तोता
पाँत	:	कतार
डैना	:	पंख
बकबक करना	:	व्यर्थ बोलना, फालतू बोलना
झपकी	:	ऊँघना
राहत	:	आराम, सुख
धार	:	तीक्ष्णता, पैनापन